Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन

देवेन्द्र कुमार यादव
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर
सम्बद्ध– वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

डॉ0 श्रद्धा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
टी0डी0पी0जी0 कालेज,
जौनपुर (उ0प्र0)

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 97-101

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 25 Dec 2021

सारांश– शोध पत्र में ''माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन'' किया गया है। अध्ययनकर्ता ने आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 50 विद्यालयों (25 सरकारी एवं 25 गैर सरकारी) विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर विद्यालय में शिक्षकों पर डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षक अभिवृत्ति मापनी'', डॉ0 पी0 कुमार एवं डी0एन0 मुथा द्वारा निर्मित ''शिक्षण प्रभावशीलता मापनी'' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिये टी–अनुपात एवं गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

की–वर्ड: – माध्यमिक स्तर, सरकारी, गैर सरकारी, शिक्षक, शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं शिक्षण प्रभावशीलता, सम्बन्ध।

प्रस्तावना– माध्यमिक स्तर की शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था का मेरूदण्ड है, क्योंकि इस स्तर की शिक्षा उच्च शिक्षा स्तर हेतु पात्रता में वृद्धि करती है और भविष्य के व्यावसायिक मार्ग की तैयारी को प्रशस्त करती है। इस स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का कार्य निष्पादन सर्वाधिक महत्व का निवेश है। एक जापानी कहावत है ''कार्यवाही के बिना जीवन का उद्देश्य एक दिवा स्वप्न है।'' माध्यमिक स्तर पर शिक्षक विद्यार्थी के जीवन के उद्देश्य को निर्धारित करने वाली शिक्षा को निर्धारित करते हैं और उसे सँवारते हैं। यहीं से विद्यार्थी भविष्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हेतु शिक्षा को अर्जित करता है जैसा कि **लिओनार्दो दा विन्ची** का कथन है ''स्वयं अर्जित की गयी शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है।'' ऐसे में शिक्षक वह परिवेश प्रदान करता है, जहाँ विद्यार्थी स्वयं अर्जित करने की क्षमता प्राप्त करता है। अध्यापक का कार्य है कि इस स्तर पर विद्यार्थियों को वर्तमान परिस्थिति को समझने तथा उससे समायोजित होना सीखएं, जैसा कि बिनोवा भावे के कथन से स्पष्ट है, ''ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।'' शिक्षक को विद्यार्थियों में शिक्षा के लिए एक भूख पैदा करनी होगी जिसके महत्व को वह वैसे ही समझे जैसा जोसेफ एडिसन वाकर समझना चाहते हैं कि ''मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की।''

अतः माध्यमिक स्तर पर शिक्षक को अपने व्यवसाय तथा अपने जीवन से संतुष्टि के बीच समायोजित रहते हुए प्रभावशाली शिक्षण व्यवस्था को अपनाना होगा।

शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। अपने विद्यार्थियों के कल्याण हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असंतोष व नगण्य लाभों के बावजूद अपने व्यावसायिक दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। ऐसे शिक्षक जो अन्य व्यवसायों का चयन न कर पाने के कारण शिक्षण व्यवसाय में आते हैं वे इस क्षेत्र में अनुपयुक्त होते हैं, जिनके कारण हमारा शिक्षा–तंत्र पंगु हो गया है, क्योंकि हमारे शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शारीरिक दक्षता, प्रभावी पहल शक्ति, प्रत्यास्मरण स्पष्टता, लेखन क्षमता, बौद्धिक योग्यता, जिज्ञासा ज्ञानार्जन के प्रति प्रेम निरन्तर–शिक्षण–प्रवीणता सुधारने की अभिप्रेरणा में कमी आ गई है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि समय रहते इसमें सुधार लाया जाय।

शिक्षण अभिवृत्ति का अर्थ है, शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्वस्थ एवं सकारात्मक दृष्टिकोण, शिक्षण समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक एवं वस्तुपरक दृष्टिकोण, अध्यापक में प्रजातांत्रिक एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण तथा छात्रों की समस्याओं के प्रति सहानुभूति दृष्टिकोण। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अभिप्राय है कि व्यक्ति के अन्दर शिक्षा के प्रति लगाव हो जो उनमें निहित शैक्षिक मूल्यों को परिपोषित करते हुए प्रस्फुटन को तत्पर कर दे और भारतीय परिदृश्य में समायोजित होना सीखाएं। शिक्षण प्रभावशीलता के द्वारा महत्वपूर्ण आदर्श शिक्षकों एवं अप्रभावपूर्ण शिक्षकों का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अनेक कर्तव्यों एवं कार्यों को बताया गया है।

शिक्षण प्रभावशीलता के द्वारा प्रभावपूर्ण आदर्श शिक्षकों एवं अप्रभावपूर्ण शिक्षकों का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कर्तव्य बोध, कार्य के प्रति लगन, ईमानदारी, योग्यता, व्यवहार, रूचियाँ, आकर्षण, गुण कक्षा शिक्षण प्रदर्शन एवं बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि आदि को सम्मिलित किया जाता है। जो शिक्षक अपनी योग्यतानुसार परिश्रम के द्वारा अपने कर्त्तव्यों को पालन करता है, योजना व तैयारी करके शिक्षण करता है तथा व्यवस्थित कक्षा प्रबन्ध रखता है, वह सदैव सफल रहता है।

समस्या कथनः– ''माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य– निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

शोध–प्रविधि – अध्ययनकर्ता ने आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 50 विद्यालयों (25 सरकारी एवं 25 गैर सरकारी) विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर विद्यालय में शिक्षकों पर डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षक अभिवृत्ति मापनी'', डॉ0 पी0 कुमार एवं डी0एन0 मुथा द्वारा निर्मित ''शिक्षण प्रभावशीलता मापनी'' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिये टी–अनुपात एवं गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन–

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता की विमा	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
शैक्षिक प्रभावशीलता	250	0.1826*	.05
व्यावसायिक प्रभावशीलता	250	0.1618*	.05
सामाजिक प्रभावशीलता	250	0.1524*	.05
संवेगात्मक प्रभावशीलता	250	0.2443*	.05
नैतिक प्रभावशीलता	250	0.1466*	.05
व्यक्तित्व प्रभावशीलता	250	0.1758*	.05
शिक्षण प्रभावशीलता	250	0.1935*	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.1826, 0. 1618, 0.1524, 0.2443, 0.1466, 0.1758 एवं 0.1935 है जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', निरस्त की जा सकती है। अतः कहा

जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कमी या वृद्धि का शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता की विमाएँ शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता में कमी या वृद्धि होगी।

2. माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन–

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता की विमा	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
शैक्षिक प्रभावशीलता	250	0.2147*	.05
व्यावसायिक प्रभावशीलता	250	0.2291*	.05
सामाजिक प्रभावशीलता	250	0.1403*	.05
संवेगात्मक प्रभावशीलता	250	0.2308*	.05
नैतिक प्रभावशीलता	250	0.2348*	.05
व्यक्तित्व प्रभावशीलता	250	0.2402*	.05
शिक्षण प्रभावशीलता	250	0.2482*	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.2147, 0.2291, 0.1403, 0.2308, 0.2348, 0.2402 एवं 0.2482 है जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', निरस्त की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कमी या वृद्धि का

शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता की विमाएँ शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता में कमी या वृद्धि होगी।

निष्कर्ष– अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- माध्यमिक स्तर के सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस. (2012) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिंतन, त्रिमूर्ति संस्थान, अक्टूबर–नवम्बर पृष्ठ संख्या 14–22
2. अग्रवाल, एस. व चंदेल, एन.पी.एस. (2009) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कृत्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 3, दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 53–66.
3. इंदिरा, बी. (1997) एन इन्वेस्टीगेशन इन टू टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू वर्क ओरियंटेशन एंड स्ट्रेस, आंध्र विश्वविद्यालय, अप्रकाशित शोध ग्रंथ.
4. जोशी, पी.के. (1985). उत्तर प्रदेश के ईसाई प्रबन्धित विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का सम्बन्ध, पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।
5. मिश्रा, डी.सी. व यादव, ए. (2007) स्ववित्तपोषित बी.एड. छात्रों की शिक्षण अभिवृत्ति का शिक्षण प्रभावशीलता, भावात्मक परिपक्वता तथा शैक्षणिक उपलब्धि पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय.
6. त्रिवेदी, राहिनी पी. (2012). ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवर्डस टीचिंग प्रोफेशन टीचिंग एट डिफरेन्ट लेवल, इन्टरनेशनल मल्टीडिसिपलिनरी ई–जर्नस, वॉल्यूम–1, इश्शू–5, मई 2012, पृ0 24–29।